# "छायावादी काव्य में पर्यावरणीय चेतना"

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर को

पी–एच.डी. (हिन्दी) की उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध–प्रबन्ध की रूपरेखा


**शोध निर्देशक**

डॉ. हरप्रकाश गौड़ (सेवानिवृत्त)
वरिष्ठ व्याख्याता एवं शोध निर्देशक-हिन्दी
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

डॉ. हरप्रकाश गौड़
वरिष्ठ व्याख्याता (सेवानिवृत)
हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर
म.द.स. विश्वविद्यालय, अजमेर

**शोधार्थी**

रामरतन सैन
राम रतन सैन
हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय,
अजमेर।


## हिन्दी–विभाग

## महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर।

## महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर को पी–एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध–प्रबन्ध की रूपरेखा

1. Name of Scholar : Ram Ratan Sain
   शोधार्थी का नाम राम रतन सैन

2. Title of Research Work: Environmental Awareness in Chhayawad Poetry

   शोध विषय छायावादी काव्य में पर्यावरणीय चेतना

3. **Location of Research Cite** (शोध कार्य स्थल)

राजकीय महाविद्यालय अजमेर, यह महाविद्यालय 'राजस्थान का हृदय कहलाने वाले अजमेर जिले में स्थित है। इस महाविद्यालय में स्नातकोत्तर कक्षाओं के साथ–साथ शोधकार्य भी सुचारू रूप से करवाया जाता है।

मेरे शोध निर्देशक डॉ. हरप्रकाश गौड़ हैं जो इसी महाविद्यालय से सेवानिवृत हो चुके हैं। यह महाविद्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय अजमेर के अन्तर्गत आता है। यह महाविद्यालय शोधार्थियों के लिए उपयुक्त है। यहाँ शोधकार्य करने के लिए आवश्यक संसाधन यथा संदर्भ ग्रंथ, पत्र–पत्रिकाएँ, पुस्तकालय, वाचनालय आदि पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं।

4. Introduction, Importance of Proposed Investigation, Objectives of the Research Work

   (शोध कार्य का परिचय, महत्त्व एवं प्रमुख उद्देश्य)–

4. (अ) परिचय – हिन्दी काव्य–सरिता विभिन्न कालखण्डों में सतत् प्रवाहमान है। आदिकाल में यह वीर और श्रृंगारिक चेतना लेकर उमड़ी। भक्तिकाल में उसने भक्तिभावना रूपी स्रोत बहाए तो रीतिकाल में पूर्णतः दरबारी संस्कृति पर आधारित मांसल सौन्दर्य–भूमि में अपना प्रसार किया। आधुनिक काल में वह कई लघु–सरिताओं में विभक्त होकर काव्य–सागर में समाहित होती गई। आधुनिक काल का प्रथम उत्थान भारतेन्दु युग अथवा पुनर्जागरण काल था। द्वितीय उत्थान द्विवेदी युग था, जिसे जागरण सुधार काल कहा जाता है। "भारतेन्दु युग का सबसे मूल्यवान तत्व था – साहित्यकारों का अदम्य उत्साह, उनमें हिन्दी के प्रति, राष्ट्र और समाज के प्रति अटूट निष्ठा। उन्होंने हँसते–हँसते अपने को उत्सर्ग करके हिन्दी के विशाल भवन का निर्माण किया, जिसको सजाने, संवारने और मूल्यवान उपकरणों से सजाने का कार्य द्विवेदी–युग के साहित्यकारों ने किया।"

डॉ. नगेन्द्र (हिन्दी साहित्य का इतिहास पेज 472)

राष्ट्रीयता, नीति और आदर्श आदि द्विवेदी युग की मुख्य प्रवृतियाँ हैं।

इनके पश्चात् युग–पुरुष ने करवट ली और एक नवीन काव्यधारा का प्रवर्तन हुआ जिसे छायावाद या आधुनिक काव्य का तृतीय उत्थान कहा जाता है। छायावाद का आरंभ 1918 में और अंत 1938 में माना जाता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने आधुनिक कविता के तृतीय उत्थान की सीमा का आरंभ संवत् 1975 (सन् 1918) से माना है। सन् 1918 को ही छायावाद की आरंभिक सीमा मानने का कारण यह है कि छायावादी पद्धति की रचनाएँ उसके आसपास प्रकाशित होने लगी थीं। निराला की "जूही की कली" (1916) के अतिरिक्त पंत की 'पल्लव' की कुछ कविताओं की रचना भी 1920 के आसपास हो चुकी थी। स्पष्ट है कि इस काल में काव्य–सरिता में एक नया मोड़ आया जो पुरानी काव्य पद्धति को छोड़कर एक नयी पद्धति के निर्माण का सूचक था। 1935 में छायावादी काव्य–चेतना को मूर्तिवान करने वाली कृति 'कामायनी' का प्रकाशन हुआ।

छायावाद का नामकरण भी सीमांकन की तरह विवादास्पद रहा है। विभिन्न विद्वानों ने छायावाद को इस प्रकार परिभाषित किया है –

(1) 'रहस्यपूर्ण सौन्दर्य–दर्शन की अभिव्यक्ति में जो अस्पष्टता उत्पन्न हो जाती है वही छायावाद है।' –मुकुटधर पाण्डेय

(2) 'छायावाद और रहस्यवाद की मूल धाराएँ पृथक–पृथक हैं।' –प्रसाद

(3) छायावाद और रहस्यवाद पर्यायवाची शब्द हैं।
"परमात्मा की छाया आत्मा में और आत्मा की छाया परमात्मा में पड़ने लगती है, तभी छायावाद की सृष्टि होती है।" – डॉ. रामकुमार वर्मा

(4) छायावाद का दूसरा सोपान एवं प्रमुख प्रवृत्ति रहस्यवाद है। –महादेवी वर्मा

(5) "बदलते हुए जीवन मूल्यों की अभिव्यक्ति, विशाल सांस्कृतिक चेतना एवं आध्यात्मिकता की झलक को नवीन शैली में व्यक्त करने वाली कविता ही छायावाद है।" –आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

(6) छायावाद एक शाश्वत सौन्दर्यवाद की प्रवृति है जो युगानुरूप भाषाशैली एवं विचारधारा को लेकर प्रकट हुई है। यह भारतीय परम्परा में अद्भुत है। – जयशंकर प्रसाद

(7) "छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है।" –डॉ. नगेन्द्र

(8) छायावाद के दो अर्थ रहस्यवाद एवं प्रतीकात्मक शैली हैं किन्तु हिन्दी साहित्य में यह एक शैली–विशेष है। इस शैली की मुख्य विशेषताएं हैं – लाक्षणिकता, प्रकृति के वस्तु–व्यापारों पर मानुषी वृत्तियों का आरोप, प्रभाव–रहस्य पर जोर और प्रेमगीतात्मक प्रवृति। – पं. रामचन्द्र शुक्ल

(9) छायावाद पाश्चात्य साहित्य की रोमांटिक परम्परा में है। – पन्त

(10) छायावाद कवियों की कुंठित वासनाओं से उद्भूत है। – डॉ. नगेन्द्र

(11) छायावाद में आधुनिक पौराणिक धार्मिक चेतना के विरूद्ध आधुनिक लौकिक चेतना का विद्रोह है। – डॉ. देवराज

(12) मध्यवर्ग की थोथी नैतिकता, रूढ़िवाद और सामन्ती बन्धनों के प्रति विद्रोह छायावाद में व्यक्त हुआ है। –डॉ. रामविलास शर्मा

संक्षेप में छायावाद की निम्नलिखित काव्य–प्रवृत्तियाँ रही हैं–

1. सौन्दर्य भावना – सौन्दर्यानुभूति – मानव के आन्तरिक सौन्दर्य का उद्घाटन छायावाद में प्रकृति के माध्यम से हुआ है। सौन्दर्य चित्रण दो रूपों में हुआ है – (1) प्रकृति सौन्दर्य चित्रण – (क) चेतनता का आरोप

(मानवीकरण) (ख) विस्मय की प्रवृति (ग) मानव जीवन की समस्त भावनाओं और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति प्रकृति के माध्यम से। (2) नारी सौन्दर्य – सूक्ष्म – सौन्दर्याभिव्यक्ति – अशरीरी नारी सौन्दर्य को विशेष महत्त्व, करुणा के स्वर, प्रकृति का आलंबन रूप में संश्लिष्ट चित्रण।

2. प्रेम भावना – प्रकृति–प्रेम, नारी–प्रेम, मानव प्रेम, शिशु (मातृ) प्रेम, अज्ञात चिरन्तन प्रिय के प्रति प्रेम – वासना का अभाव। हृदय की कोमल वृत्तियों का उद्घाटन – रहस्योन्मुख प्रेम।
3. मानवतावादी दृष्टिकोण – नारी के प्रति उच्च और उदात्त भावना।
4. जीवन के बदलते हुए मूल्यों की अभिव्यक्ति – प्राचीन जीवन मूल्यों के प्रति विद्रोह की भावना।
5. रहस्य भावना –
6. तत्वं चिन्तन – अद्वैत दर्शन, योग दर्शन, विशिष्टाद्वैत, पुनर्जन्म, कर्मफल, आनन्दवाद, विश्वमानवतावाद और सामाजिक यथार्थवादी तत्वों का दार्शनिक चिन्तन। प्रसाद का मूल दर्शन – आनन्दवाद। कामायनी विश्वमानवतावाद। महादेवी – अद्वैत, सांख्य और योग दर्शन पन्त – जगत की अनित्यता, तप का महत्त्व।
7. वेदना की युगानुरूप विवृत्ति (प्रकटीकरण) – प्रसाद और महादेवी के काव्य में वेदनानुभूति का दर्शन सेवावाद और अध्यात्मवाद है। साधनात्मक जीवन का दृढ़ स्वर – 'प्रिय मेरे गीले नयन बनेंगे आरती।' पन्त में सौन्दर्य की खोज और अनित्यता के कारण दुःख की भावना जाग्रत हुई। निराला के जीवन में सामाजिक जीवन की कठोरताओं से एक अजीब निराशा की झलक एवं झुंझलाहट आ गई है --

   जीवन चिरकालिक क्रन्दन
   मेरा अन्तर वज्र कठोर
   देना जी भर कर झकझोर।

8. विज्ञान का प्रभाव – बुद्धिवाद का महत्त्व।
9. राष्ट्रीयता एवं देशप्रेम-- पुरातन के गौरव का स्मरण (अतीत का गौरव–गान) क्रान्ति का स्वर – 'विप्लव गायन' – 'नवीन'। 'दिनकर' की 'हुंकार' नरेन्द्र की 'प्रभात फेरी'।

10.श्रृंगारिकता की भावना और ऐंद्रिकता – तब तक समझूँ कैसे प्यार अधरों से जब तक न कराये प्यारी उस मधु रस का पान् (बच्चन – 'आकुल अंतर')

11.वैयक्तिक चिन्तन और अनुभूति अथवा आत्माभिव्यंजन

12.गीत और प्रगीत मुक्तक

13.प्रतीकात्मक शैली और अलंकार योजना

मनुष्य अपने वातावरण/पर्यावरण की देन है। उसके इर्द–गिर्द जैसा परिवेश होगा वह वैसा ही हो जाएगा। चेतना प्रत्येक सजीव प्राणी की मूलभूत विशेषता है। चेतना शून्य व्यक्ति बेहोश अथवा मृत प्रायः होता है। 'चेतना' शब्द का कोशगत अर्थ – 1. ज्ञानमूलक मनोवृति, 2. बुद्धि, समझ, 3. होश–हवास 4. स्मृति, याद आदि है। यह एक भाववाचक स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द है। चेतना जागृति का पर्याय है अर्थात् सचेत या सावधान होना। पर्यावरण/प्रकृति सम्बन्धी जागरूकता पर्यावरण चेतना कहलाती है। छायावाद में निहित पर्यावरण/प्रकृति सम्बन्धी चेतना का अनुशीलन एवं उद्‌घाटन ही मेरे शोध–विषय का वास्तविक मंतव्य है।

## 4.(ब) प्रस्तावित शोध कार्य का महत्त्व –

किसी भी साहित्य के महत्त्व का आकलन दो दृष्टिकोणों से किया जाना चाहिए –

(अ) साहित्यिक सौन्दर्य और गरिमा की दृष्टि से।

(ब) प्रभाव की दृष्टि से।

प्रथम दृष्टिकोण से विचार किया जाए तो छायावाद साहित्यिक सौन्दर्य और वैचारिक गरिमा से ओतप्रोत है। छायावाद में कवि ने प्रकृति के माध्यम से अपनी वैयक्तिक अनुभूतियों को शाब्दिक अभिव्यक्ति दी है। इस युग (काव्य–प्रवृत्ति) की कवि–प्रतिभा सर्जना के विविध क्षेत्रों में गतिशील रही है और उसने नयी दिशाओं का संकेत भी किया है। अभिव्यंजना की दृष्टि से इस काल के काव्य में जहाँ सूक्ष्म वक्रता और जटिल संरचना दिखाई देती है, वहाँ राष्ट्रीय सांस्कृतिक कविता और प्रेम–प्रधान स्वच्छन्द वैयक्तिक काव्यधारा में शैली सरलता एवं आवेग से युक्त दिखाई देती है।

इस काव्य की प्रकृति सम्बन्धी दृष्टि में नवीनता और ताजगी है। यहाँ आकर जड़ और चेतन का द्वैत मिट जाता है और कवियों ने जिस भाँति चेतन सृष्टि के विविध रूपों के सूक्ष्म निरीक्षण का परिचय दिया है उसी भाँति प्रकृति–चित्रण में भी सूक्ष्म, संश्लिष्ट और नूतन उद्भावनाएँ की हैं। उपर्युक्त तत्वों की खोज, स्थापना एवं निदर्शन मेरे कार्य को महत्त्व प्रदान करेगा।

दूसरे अनुभूति की दृष्टि से इस युग का काव्य व्यक्तिनिष्ठ होने के साथ ही सामाजिकता से प्रतिबद्ध रहा है। इसमें संदेह नहीं कि अनेक कविताओं एवं गीतों में व्यक्तिनिष्ठ भावना ही प्रधान रूप से मुखर हुई है, किन्तु महान काव्य में यह व्यापक सामाजिक जीवन से सम्बद्ध होती हुई उदात्त आध्यात्मिक स्तर तक पहुँचने का प्रयास करती है। छायावादी काव्य ने दो संस्कृतियों – भौतिक तथा आध्यात्मिक – के द्वैत और संघर्ष की ज्वलन्त आधुनिक समस्या से जूझने का प्रयास किया है तथा इस धारा के कवियों ने अपने–अपने ढंग से इस द्वैत का निषेध कर दोनों संस्कृतिंयों के समन्वय का यत्न किया है। किन्तु स्पष्टतः यह समन्वय आध्यात्मिक सत्ता की प्रमुखता पर आधारित है। सारांश रूप में कहा जा सकता है कि छायावादयुगीन काव्य महान् उपलब्धियों और अनेक सभावनाओं से युक्त है। इसका व्यापक प्रभाव आज भी सहृदय पाठकों के हृदय को आत्मविभोर और अश्रुविगलित कर जाता है।

**शोध कार्य का महत्त्व –** मेरा शोध सर्वथा उपयोगी एवं उपादेय होगा क्योंकि –

1. छायावाद की मूल प्रकृति प्रकृति–चित्रण है। पर्यावरण चेतना सम्बन्धी यह शोध भावी अनुसंधित्सुओं को इस विषय में एक दिशा प्रदान करेगा।
2. छायावादी कवियों ने किस प्रकार अपने काव्य में वैयक्तिक अनुभूतियों को प्रकृति–चित्रण के माध्यम से अभिव्यक्ति दी और काव्य–सागर को भरा, इस विषयक पर्याप्त उदाहरण मिल सकेंगे।
3. मेरा शोध कार्य छायावाद में निहित विभिन्न वादों एवं चेतना के विविध आयामों के प्रति एक तर्जनी–संकेत होगा।
4. इस सम्बन्ध में पूर्व में हो चुके शोधों का पिष्टपेषण न होकर मौलिक एवं नवीन होगा।

5. छायावादी काव्य को पर्यावरणीय दृष्टिकोण से परखने के कारण मौलिक और प्रासंगिक होगा।

4.(स) **शोध कार्य का प्रमुख उद्देश्य** — यद्यपि कोई भी कार्य निरुद्देश्य नहीं होता तथापि मेरे शोध कार्य के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित होंगे —

(अ) हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में छायावादी काव्य का अनुशीलन करना।

(ब) छायावाद में पर्यावरणीय–चेतना विषयक काव्य का अध्ययन एवं अन्वेषण करना।

(स) छायावाद के प्रकृति विषयक विभिन्न दृष्टिकोणों का पर्यावरणीय समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करना।

(द) छायावादी काव्य का मूल्यांकन करना।

## 5. Review (विषयवस्तु से पूर्व कार्य)

पूर्व में 'छायावाद' सम्बन्धी स्वीकृत शोध प्रबन्धों में 'छायावाद' सम्बन्धी कार्य हुआ है किन्तु 'छायावादी काव्य में पर्यावरणीय चेतना' विषयक शोध कार्य देखने में नहीं आया है।

## 6. Research Gaps (शोध रिक्तता)–

पर्यावरण असंतुलन एक ज्वलन्त वैश्विक समस्या है। इस संदर्भ में सोचने व लिखने में छायावादी कवियों की प्रज्ञा व कलम कहाँ तक सफल सिद्ध हुई है? यद्यपि छायावाद से सम्बन्धित शोध–कार्य कई बार हुआ है तथापि 'छायावादी काव्य में पर्यावरणीय–चेतना' से सम्बन्धित शोध रिक्तता की पूर्ति प्रस्तुत शोध से हो सके, ऐसा प्रयास अवश्य रहेगा।

## 7. Major Hypothesis (प्राक्कल्पना) –

छायावाद प्रकृति–प्रधान काव्य है। छायावाद में प्रकृति–वर्णन क्या पर्यावरण चेतना का पहलू है? क्या छायावाद और रहस्यवाद एक ही है अथवा नहीं? जैसा कि डॉ. नामवर सिंह ने कहा है — "छायावाद के अठारह–बीस वर्षों के इतिहास

में अनेक विशेषताएँ जो आरम्भ में थी, वे कुछ दूर जाकर समाप्त हो गयी और फिर अनेक नयी विशेषताएँ जुड़ती गईं। निःसंदेह छायावाद के उदय और अस्त की चर्चा तो हुई है, लेकिन उसके क्रमिक विकास का विचार बहुत कम हुआ है। इसका मुख्य कारण यही है कि भाववादी आलोचकों ने छायावाद को प्रायः समाज से ऊपर सर्वथा शुद्ध भाव – राशि मानकर विचार किया है"। इस सन्दर्भ में छायावाद के क्रमिक विकास का सम्यक् अध्ययन किया जाएगा तथा छायावादी कवियों के काव्य में पर्यावरणीय–चेतना विषयक मतों की खोज की जाएगी। क्या छायावादी काव्य कोरा काल्पनिक या वायवी काव्य है या इससे पृथक उसके प्रकृति–चित्रण में कोई पर्यावरणीय चेतना या संरक्षण विषयक् जाग्रति का संदेश भी निहित है? इस तथ्य की खोज की जाएगी। प्रकृति वर्णन क्या पर्यावरणीय चेतना का ही एक आयाम है अथवा नहीं।

## 8. Research Methodology (शोध प्रविधि)–

शोध एक वैज्ञानिक विधि / प्रक्रिया है जिसमें प्रकृति से प्राप्त तथ्यों का क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित अध्ययन किया जाता है। मेरे द्वारा किए जा रहे शोध की पद्धतियाँ – विवरणात्मक, वर्णनात्मक, तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक होंगी। शोध के अन्तर्गत हिन्दी साहित्य के इतिहास में आधुनिक काल के छायावादी कवियों के साहित्य का सम्यक अनुशीलन किया जाएगा। अनुशीलन एवं शोध में यथावश्यक शोध प्रविधियों का प्रयोग कर शोध को मौलिक, प्रासंगिक एवं उपादेय बनाने का प्रयास रहेगा।

'छायावाद' में प्रकाशित साहित्य (पद्य) का गंभीरता से अध्ययन कर छायावादी कवियों के प्रकृति वर्णन (पर्यावरण) सम्बन्धी काव्य का मूल्यांकन कर विविध निष्कर्ष निकाले जायेंगे। सम्पूर्ण शोध को भूमिका व उपसंहार के अन्तर्गत छः अध्यायों में विभाजित किया गया है। यद्यपि छायावाद में पर्यावरणीय चेतना को महज शोध कार्य में समेटना 'सागर को गागर' में समेटना जैसा कठिन कार्य है तथापि मैं यथासंभव उसमें पूर्णता को प्राप्त करने का सद्प्रयास करूंगा।

अध्याय विन्यास निम्नलिखित प्रकार से है :–

# छायावादी काव्य में पर्यावरणीय चेतना

## अध्यायों का वर्गीकरण

**भूमिका–**

**प्रथम अध्याय: छायावाद की अवधारणा**

(1) छायावाद: नामकरण, समय–सीमा।

(2) छायावाद – युगीन परिस्थितियाँ एवं प्रवृत्तियाँ

**द्वितीय अध्याय: पर्यावरण एवं चेतना**

(1) पर्यावरण की अवधारणा एवं परिभाषा

(2) पर्यावरण के विभिन्न तत्व

(3) पर्यावरण एवं मानवीय चेतना

(4) वर्तमान में पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता

**तृतीय अध्याय: छायावाद की प्रमुख काव्य प्रवृत्ति – प्रकृति चित्रण**

(1) छायावाद की विविध प्रवृत्तियाँ

(2) छायावाद – युग बोध – विभिन्न मत/वाद

(3) प्रकृति चित्रण – (1) आलम्बन रुप में –<br>(2) आश्रय रुप में –<br>(3) उद्दीपन रुप में

(4) प्रकृति–चित्रण के विविध रुप – मानवीकरण आदि।

**चतुर्थ अध्याय: छायावादी कवियों की पर्यावरण चेतना**

(1) छायावाद के प्रमुख कवि – निराला, प्रसाद, पन्त एवं महादेवी।

(2) पर्यावरणीय चेतना के विविध तत्व–(1) सौन्दर्य वर्णन (प्राकृतिक)<br>(2) 'कामायनी' में पर्यावरण (प्रकृति)

(3) छायावादी कवियों के काव्य में निहित प्रकृति–वर्णन

**पंचम अध्याय: विविध स्थापनाएँ, निष्कर्ष, मूल्यांकन**

(1) छायावाद सम्बन्धी विविध मत

(2) छायावाद का महत्त्व

**षष्ठम अध्याय: हिन्दी पर्यावरणीय चेतना सम्बन्धी साहित्य और छायावाद एक समग्र मूल्यांकन**

**उपसंहार**

9. आधार ग्रंथ

1. जयशंकर प्रसाद – काव्य संग्रह – उर्वशी (1909), वनमिलन (1909), प्रेमराज्य (1909), अयोध्या का उद्धार (1910), शोकोच्छवास (1910) वभ्रुवाहन (1911), कानन कुसुम (1913), प्रेमपथिक (1913), करूणालय (1913), महाराणा का महत्त्व (1914), झरना (1918), आँसू (1925), लहर (1933), कामायनी (1935)
2. महादेवी वर्मा – काव्य संग्रह – नीहार (1930), रश्मि (1932), नीरजा (1935), सांध्यगीत (1936), यामा (1940)
3. सुमित्रानंदन पंत – काव्य ग्रंथ – उच्छवास (1920), ग्रंथि (1920), वीणा (1927), पल्लव (1928), गुंजन (1932), लोकायतन (महाकाव्य)
4. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' – काव्य संग्रह – अनामिका (1923), परिमल (1930), गीतिका (1936), तुलसीदास (1938)

10. **List of Reference Books (सहायक सन्दर्भ ग्रंथ सूची)**

**आलोचनात्मक ग्रन्थ**

1. आधुनिक जीवन और पर्यावरण, दामोदर शर्मा व हरिशचन्द्र व्यास, प्रभात प्रकाशन, प्रथम संस्करण (2004)
2. आधुनिक हिन्दी साहित्य : मनन और मूल्यांकन, डॉ. सूर्यनारायण वर्मा, विद्या प्रकाशन, कानपुर प्रथम संस्करण (2004)
3. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ डॉ. नामवर सिंह लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, नवीन संस्करण (2005)
4. आधुनिक हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ डॉ. भरत पटेल, विद्या प्रकाशन, कानपुर नवीन संस्करण (2005)

5. कामायनी जयशंकर प्रसाद (2000) हिन्द पॉकेट बुक्स, जी.टी.रोड़, दिल्ली नवीन संस्करण (2005)

6. ग्लोबल वार्मिंग, लेखक योगेशवरपुरी नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, नवीन संस्करण (2008)

7. छायावाद नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली नवीन संस्करण (2005)

8. छायावाद और निराला, वीणा दाढे, विद्या प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण (2008)

9. छायावाद की खड़ी बोली और प्रसाद डॉ. कृपाशंकर पाण्डे विद्या प्रकाशन, कानपुर, नवीन संस्करण (2005)

10. निराला की साहित्य–साधना 1,2,3 खंड लेखक रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली संशोधित संस्करण (1998)

11. निराला आत्महंता आस्था दूधनाथ सिंह, परिमल प्रकाशन, इलाहाबाद, नवीन संस्करण (2005)

12. निराला लेखक रामविलास शर्मा राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, संशोधित संस्करण (2000)

13. निराला रचनावली (आठ खण्ड) सम्पादक नन्द किशोर नवल, वाणी प्रकाशन, संशोधित संस्करण (2005)

14. निराला काव्य में प्रकृति लेखिका रेणुबाला विद्या प्रकाशन, कानपुर नवीन संस्करण (2011)

15. पंत की कविताओं में मानवतावाद एवं प्रकृति चित्रण, लेखक दिलीप गावित, विद्या प्रकाशन, कानपुर नवीन संस्करण (2011)

16. पर्यावरण दशा और दिशा, गिरिराज शरण अग्रवाल, मीना अग्रवाल, डायमंड पॉकेट बुक्स, नवीन संस्करण (2003)

17. पर्यावरण अध्ययन लेखक दयाशंकर त्रिपाठी, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, वाराणसी, नवीन संस्करण (2005)

18. पर्यावरण शिक्षा लेखिका भारती दशोरा, संतोष पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली प्रथम संस्करण (2013)

19. भार्गव आदर्श हिन्दी शब्दकोश सम्पादक पं. रामचन्द्र पाठक, भार्गव बुक डिपो, चौक वाराणसी, नवीन संस्करण (1998)

20. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धान्त लेखक डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संशोधित संस्करण (2009)

21. राजपाल हिन्दी शब्दकोश डॉ. हरदेव बाहरी राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, बारहवां संस्करण (1998)

22. वायुमंडलीय प्रदूषण, हरिनारायण श्रीवास्तव, मेसर्स मलिक एण्ड कम्पनी, जयपुर, संशोधित संस्करण (2010)

23. हमारा पर्यावरण लेखक लाईक फतेहअली, नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, नवीन संस्करण (2007)

24. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास डॉ. रामकुमार वर्मा, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण (1985)

25. हिन्दी साहित्य का इतिहास आचार्य रामचन्द्र शुक्ल नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, पंचम संस्करण (संवत 2067)

26. हिन्दी साहित्यः युग और प्रवृत्तियां डॉ. शिवकुमार शर्मा प्रभात प्रकाशन दिल्ली, नवीन संस्करण (1973)

27. हिन्दी साहित्य का इतिहास सं. डॉ. नगेन्द्र नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, तृतीय संस्करण (2009)

28. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास डॉ. बच्चन सिंह दिल्ली प्रचारक संस्थान वाराणसी, पंचम संस्करण (2008)

29. हिन्दी साहित्य–उद्‌भव और विकास सं. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण (2000)
30. हिन्दी साहित्य कोश भाग – 1 व 2 सं. डॉ. धीरेन्द्र वर्मा ज्ञानमंडल लिमिटेड संत कबीर रोड, वाराणसी पुनर्मुद्रण (2010)
31. हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास लेखक श्यामचन्द्र कपूर, आशा प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण (2011)
32. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास लेखक गणपति चन्द्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, बारहवां संस्करण (2011)
33. हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ लेखक राजनाथ शर्मा, भारत प्रकाशन मन्दिर, सुभाष रोड़, अलीगढ़, संस्करण (1986)
34. हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास लेखक डॉ. तिलकराज शर्मा, आर्य बुक डिपो, करोल बाग, नई दिल्ली, संस्करण (2011)
35. हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास, सम्पादक रामधारी सिंह दिनकर, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, संस्करण (1983)
36. हिन्दी साहित्य सर्वेक्षण और समीक्षा सम्पादक श्याम नन्दन प्रसाद सिंह, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली, प्रथम संस्करण (1999)
37. हिन्दी आलोचना के आधार स्तम्भ सं. रामेश्वर लाल खंडेलवाल लोकभारती प्रकाशन– इलाहाबाद, संस्करण (2004)
38. हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास (आधुनिक काल) भाग द्वितीय ले. आनंदमंगल वाजपेयी मा.शि.बो.राज., अजमेर नवीन संस्करण (2008)

## पत्र–पत्रिकाएं

### शोध पत्रिकाएं

1. आलोचना, दिल्ली
2. नया ज्ञानोदय भारतीय ज्ञानपीठ मन्दिर, नई दिल्ली।

3. पंचशील शोध पत्रिका, जयपुर।

4. साक्षात्कार (मासिक) साहित्य अकादमी म.प्र. संस्कृति परिषद, भोपाल

**साहित्यिक पत्रिकाएं**

1. अक्सर, जयपुर

2. अनुकृति (त्रैमासिक) जयश्रीशर्मा, मानसरोवर, जयपुर।

3. अभिव्यक्ति महेन्द्र नेह, 80, प्रताप नगर, दादाबाड़ी, कोटा

4. कल्पना, हैदराबाद

5. तनिमा (मासिक) श्रीमती् शकुन्तला सरूपरिया, सिक्ख कॉलोनी, एम. बी. कॉलेज उदयपुर

6. नूतन भाषा सेतु (त्रैमासिक) डॉ. अम्बाशंकर नागर हिन्दी साहित्य परिषद, अहमदाबाद

7. मधुमती (मासिक) राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर (राज.)

8. माधुरी, इलाहाबाद

9. रसमुग्धा (त्रैमासिक) डॉ. ओमप्रकाश पंचरगिया, पंचरगिया भवन चिड़ावा (राज.)

10. वैचारिकी (त्रैमासिक) शंकरलाल सोमानी, 12/1, निलेसैन गुप्ता, सरणी कोलकाता

11. सरस्वती, इलाहाबाद

12. साहित्य अमृत (मासिक) 4/19, आसफअली रोड़, नई दिल्ली

13. हंस (मासिक) सम्पादक राजेन्द्र यादव अक्षर प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली

14. हरसिंगार (त्रैमासिक) साहित्य मंडल श्रीनाथद्वारा

**शोध प्रबन्ध**

1. छायावादी काव्य और निराला, डॉ. कुमारी शान्ति श्रीवास्तव, ग्रंथम प्रकाशन, रामबाग, कानपुर अक्टूबर 1966